Impact Factor (SJIF): 6.126 E-ISSN: 2583-1615, P-ISSN: 3049-3498

International Journal of Research in Academic World

**Received**: 27/May/2025 **IJRAW:** 2025; 4(7):33-38 **Accepted:** 05/July/2025

# उच्च माध्यमिक स्तर पर नवोदय विद्यालय एवं राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि का उनके बौद्धिक स्तर तथा व्यक्तित्व के सन्दर्भ में अध्ययन

***[1]डॉ. मन्दीप कुमार, [2]शालिनी त्यागी, [3]ओम कुमार और [4]नकुल किरण**

*[1]सह प्राध्यापक, शिक्षा संकाय, श्री राम कॉलेज, मुज़फ्फरनगर, उत्तर प्रदेश भारत।

[2]प्रोफ़ेसर, शिक्षा विभाग, मेरठ कॉलेज, मेरठ, उत्तर प्रदेश भारत।

[3]शोधार्थी, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश भारत।

[4]सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्रविभाग, NIT, बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश भारत।

**सारांश**

मानव जीवन के इतिहास में आदि काल से शिक्षा कव विकास एवं प्रसार प्रचार होता रहा है। प्रत्येक दश/समाज अपनी संस्कृति और समीक्षा को पूर्ण रूप से पनपने के साथ ही समय की चुनौतियों का सामना करने के लिए अपनी विशिष्ट शिक्षा प्रणाली विकसित करता है। लेकिन इस निरन्तर चले आ रहे कार्य ने समय व परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन करना होता है। स्वतन्त्रता पश्चात् से ही हमारे देश के शिक्षा विशेषज्ञों ने बिना भेदभाव के 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए अनिवार्य व निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था की। नवोदय विद्यालय समिति का गठन भी इस योजना का एकअंग माना जाता है। नवोदय विद्यालय जिस उद्देश्य के लिए खोले गये थे वे उस उद्देश्य को पूरा कर रहेहैं या नहीं इस समस्या का महत्व एवं आवश्यकता इसलिए महसूस की गयी है, ताकि 06-14 वर्ष तक के पिछड़े क्षेत्रों में छात्रों के लिए उचित शिक्षा व्यवस्था की प्रगति का पता लगाया जा सके और अन्य राजकीय विद्यालयों से उनकी तुलना की जा सके। अध्ययन के उद्देश्य. नवोदय विद्यालयों व राजकीय विद्यालयों से उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं बुद्धि के गुणों का तुलनात्मक अध्ययन करना। इस शोध में आंकड़ें संग्रहण हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है जिसका आधार स्वनिर्मित प्रश्नावली है। जो बच्चे नवोदय विद्यालय में अध्ययनरत है। उनका बौद्धिक स्तर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों मे अध्ययनरत विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक है। अतः निष्कर्ष यह निकलता है कि नवोदय विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों का बौद्धिक स्तर तथा व्यक्तित्व राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों से ऊँचा है।

**मुख्य शब्द**: नवोदय विद्यालयए राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयए छात्रों का बौद्धिक स्तर तथा व्यक्तित्वए शैक्षिक उपलब्धि आदि।

## प्रस्तावना

मानव जीवन के इतिहास में आदि काल से शिक्षा कव विकास एवं प्रसार प्रचार होता रहा है। प्रत्येक दश/समाज अपनी संस्कृति और समीक्षा को पूर्ण रूप से पनपने के साथ ही समय की चुनौतियों का सामना करने के लिए अपनी विशिष्ट शिक्षा प्रणाली विकसित करता है। लेकिन इस निरन्तर चले आ रहे कार्य ने समय व परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन करना होता है। स्वतन्त्रता पश्चात् हमारे नेताओं ने राष्ट्र निर्माण के लक्ष्यों की रूपरेखा तैयार की थी, जिसका साकार रूप हमारा संविधान है। हमारे संविधान में आगे बढ़ने के लिए सभी के लिए खुला अवसर प्रदान किया है। हमारा संविधान प्रस्तावना में ही भारत को सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न लोकतन्त्रात्मक धर्म निरपेक्ष समाजवादी गणराज्य बनाने के लिए समस्त नागरिकों स्वतन्त्रता प्रदान करता है व राष्ट्र की एकता व अखण्डता की कामना करता है और शिक्षा के प्रयास हेतु अनेक आयोग गठित किये गये जो समय-समय पर शिक्षा की स्थिति को सुधारने में सहायक रहे हैं। स्वतन्त्र भारत में इसका प्रथम प्रयास 1948 में डॉ. राधा कृष्णन की अध्यक्षता में हुआ। जिसने माध्यमिक शिक्षा व्यवस्था को दुरूस्त करने में अपना अमूल्य योगदान दिया। इसके पश्चात् (1964-66) में कोठारी आयोग व स्वतन्त्रता पश्चात् प्रथम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 में घोषित की गयी। फिर नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 जिसमें (10 $ 2 $ 3) की संस्तुति की गयी। इसी प्रकार पांचवीं पंचवर्षीय योजना में पिछड़े क्षेत्रों ने जवाहर नवोदय विद्यालय की व्यवस्था इस उद्देश्य के साथ की गयी कि पिछड़े क्षेत्रों में भी शिक्षा का विकास हो और प्रतिभाशाली छात्रों को मौका मिले वे भी आगे बढ़ सकें। उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा का एक स्वरूप विकसित किया गया है। जिसमें प्रत्येक स्तर की शिक्षा के लिए पाठ्य बिन्दुओं का निर्धारण करने के साथ ही विषय शिक्षण की प्रभावी विधियाँ अपनाने पर बल दिया गया है। इन बिन्दुओं में नैतिक

*Corresponding Author: डॉ. मन्दीप कुमार

शिक्षा समाज उपयोगी उत्पादन कार्य तथा समाज सेवा पाठ्यक्रम सहगामी क्रिया कलाप, खेलकूद तथा व्यायाम, स्काउटिंग, रेडक्रास, राष्ट्रीय सेवा योजना, नेशनल क्रेडिट कोर एवं पर्यावरण शिक्षा आदि जैसे विषयों का समावेश किया गया है। इन सब विषयों के अध्ययन में शामिल होने से छात्रों में व्यक्तित्व बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि आदि का सर्वांगीण विकास सम्भव हो सकेगा।

## समस्या का महत्व एवं आवश्यकता

स्वतन्त्रता पश्चात् से ही हमारे देश के शिक्षा विशेषज्ञों ने बिना भेदभाव के 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए अनिवार्य व निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था की। नवोदय विद्यालय समिति का गठन भी इस योजना का एकअंग माना जाता है। नवोदय विद्यालय जिस उद्देश्य के लिए खोले गये थे वे उस उद्देश्य को पूरा कर रहेहैं या नहीं इस समस्या का महत्व एवं आवश्यकता इसलिए महसूस की गयी है, ताकि 06-14 वर्ष तक के पिछड़े क्षेत्रों में छात्रों के लिए उचित शिक्षा व्यवस्था की प्रगति का पता लगाया जा सके और अन्य राजकीय विद्यालयों से उनकी तुलना की जा सके।

## तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण

**नवोदय विद्यालय:** केन्द्र सरकार द्वारा पिछड़े क्षेत्रों में संचालित विद्यालय ताकि पिछड़े क्षेत्रों के प्रतिभाशाली छात्र भी आगे बढ़ सकें।
**राजकीय विद्यालय:** राज्य सरकार द्वारा संचालित विद्यालय।
**व्यक्तित्व:** परसोना शब्द से इसकी उत्पत्ति हुई है। अर्थात् मुखौटा लेकिन आज के सन्दर्भ में व्यक्तित्व का अर्थ मनुष्य के बाह्य व आन्तरिक गुणों का समन्वित रूप से है।
**बौद्धिक स्तर:** बुद्धि के स्वरूप भिन्न भिन्न हैं। प्रमुखतः इसे (1) उच्च बौद्धिक स्तर, (2) सामान्य बौद्धिक स्तर, (3) निम्न बौद्धिक स्तर से मापा जाता है।
**शैक्षिक उपलब्धि:** शैक्षिक उपलब्धियाँ वे उपलब्धि हैं जो शिक्षा ग्रहण करने के प्रयास में शिक्षार्थी द्वारा अर्जित कर सिद्ध की जाती हैं (इसका रूप परीक्षाफल में स्पष्ट) दिखाई पड़ता है।

## अध्ययन के उद्देश्य

किसी भी समस्या का समाधान करने से पूर्व उसके उद्देश्य निश्चित किये जाते हैंः-

1. नवोदय विद्यालयों व राजकीय विद्यालयों से उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के गुणों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. नवोदय विद्यालय तथा राजकीय विद्यालयों में उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययरत विद्यार्थियों में बुद्धिलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. नवोदय विद्यालय एवं राजकीय विद्यालयों में उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में व्यक्तिगत की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. नवोदय विद्यालय एवं राजकीय विद्यालयों में उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उनके व्यक्तित्व तथा बुद्धि लब्धि के सन्दर्भ में अध्ययन करना।

## परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत शोध अध्ययन की निम्नलिखित परिकल्पनाएँ हैंः-

1. नवोदय विद्यालय तथा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्याथयों के व्यक्तित्व के गुणों के सन्दर्भ में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. नवोदय विद्यालयों तथा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है।
3. नवोदय विद्यालयों तथा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के बुद्धि के स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

## अध्ययन की सीमायें

अध्ययन का स्वरूप काफी विस्तृत होता है उसके सही निष्कर्ष के लिए उसका सीमांकन अनिवार्य है।

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन में अध्ययन हेतु केवल उत्तर प्रदेश के मेरठ मण्डल के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थी को ही लिया गया है।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल दो प्रकार के उच्च माध्यमिक विद्यालयों नवोदय विद्यालय व राजकीय विद्यालयों को ही लिया गया है।
3. प्रस्तुत शोध अध्ययन में छात्र एवं छात्राओं दोनो को ही लिया गया है।
4. प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल व्यक्तित्व गुणाऐं बुद्धि लब्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि का ही अध्ययन किया गया है।
5. प्रस्तुत शोध अध्ययन का क्षेत्र उच्च माध्यमिक विद्यालयो तक ही सीमित है।
6. प्रस्तुत शोध अध्ययन 100 छात्रों तक ही सीमित है।

## आकडों का सांख्यिकीय विशलेषण

प्रस्तुत शोध में उपलब्ध आंकडो के विश्लेषीकरण के लिये निम्न संख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया.

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. टी0 सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया।

## अध्ययन का अभिकल्प

नवोदय विद्यालय व राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों में शैक्षिक रूप का उनके बौद्धिक स्तर तथा व्यक्तित्व के सम्बन्ध में जानने के लिए आकड़ों का संग्रहण मेरठ जनपद से नवोदय विद्यालय व राजकीय विद्यालय के छात्रों को चुना गया है, जिससे उनमें व्यक्तित्व व बौद्धिक स्तर में सम्बन्ध में अनुमान लगाया जा सकता है।

## अध्ययन विधि

इस शोध में आंकड़ें संग्रहण हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है जिसका आधार स्वनिर्मित प्रश्नावली है।

## उपकरण

1. शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण-शैक्षिक उपलब्धि का पता लगाने के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया जो 60 प्रश्नों में है जिसका उत्तर हाँ अथवा नहीं में देना है।
2. व्यक्तित्व परीक्षण-आंकड़ों में संग्रहण हेतु डॉ. महेश भार्गव द्वारा निर्मित डी°पी°आई° टेस्ट का प्रयोग किया गया है। इसमें 60 प्रश्न हैं जिनका उत्तर हाँ, नहीं अथवा अनिश्चित में देना है।

## परिकल्पना 1

उच्च माध्यमिक स्तर के विभिन्न संस्थानो के बच्चों के व्यक्तित्व के गुणों में सार्थक अन्तर नही है। परीक्षण टी0 परीक्षण विधि द्वारा किया गया जिसकी सारणी निम्न प्रकार से है।

**तालिका 1**

| व्यक्तित्व निर्धारण की विमाएँ | छा0 की सं0 | माध्य | मानक विचलन | छात्रों की संख्या | माध्य | मानक विचलन | टी मूल्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| समायोजन एवं समस्या | 50 | 21-04 | 3-01 | 50 | 22-10 | 3-38 | 1-66 |
| चिन्ता | 50 | 26-84 | 2-23 | 50 | 27-50 | 3-12 | 1-22 |
| नैराश्य | 50 | 20-25 | 3-30 | 50 | 19-02 | 2-50 | 8-78 |
| स्नायु दोर्बल्य | 50 | 21-12 | 3-75 | 50 | 18-95 | 5-02 | 4-61 |
| आत्मबोध | 50 | 20-05 | 3-56 | 50 | 21-12 | 4-12 | 3-57 |
| स्वभाव | 50 | 25-21 | 3-14 | 50 | 23-12 | 3-75 | 7-46 |

**समूह अ:** नवोदयए **समूह ब:** राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
विश्वास के स्तर 0.05 पर वांछित टी मूल्य 1.90
विश्वास के स्तर 0.01 पर वांछित टी मूल्य 2.67
प्राप्त टी मूल्य 0.05 स्तर सार्थकए प्राप्त टी मूल्य 0.01 तथा 0.05 दोनों पर सार्थक

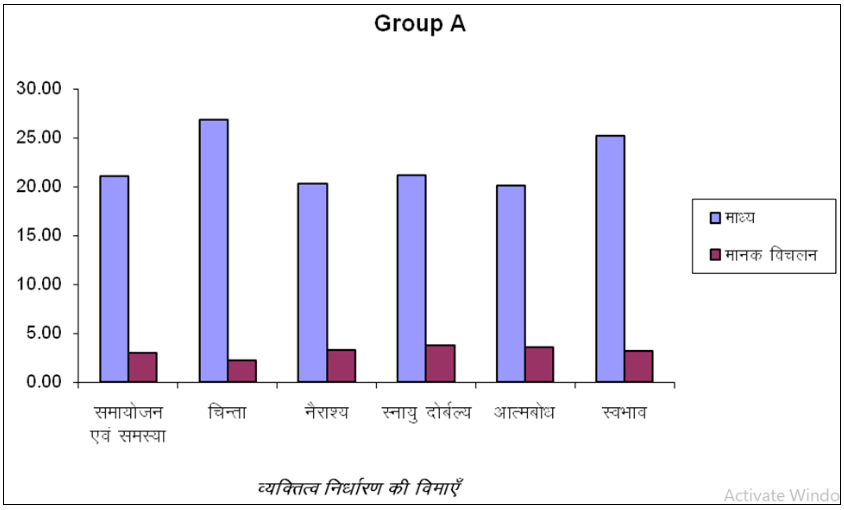


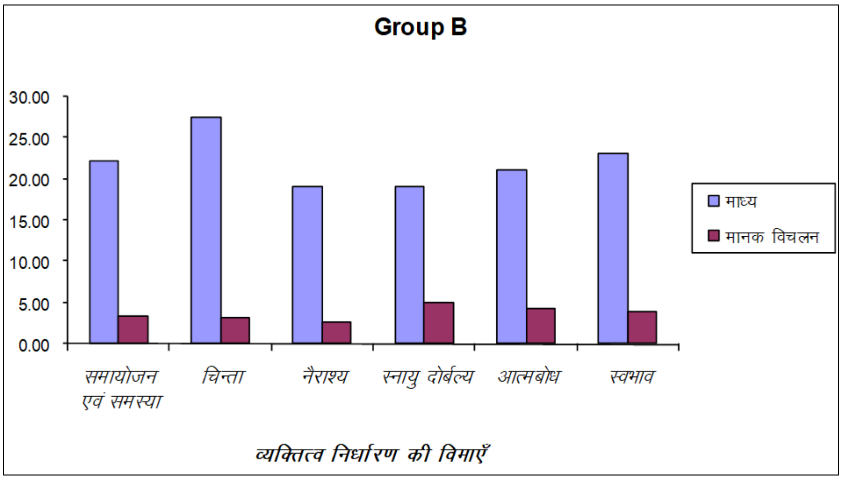


**लेखाचित्र 1**

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि व्यक्तित्व के गुणों के समायोजन एवं समस्या तथा चिन्ता आदि पक्षों में टी मूल्य किसी भी स्तर पर सार्थक नही है। इससे निष्कर्ष निकाला जा सकता है। कि नवोदय एवं राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में विद्यार्थियो के उपरोक्त दोनों ही पक्षों में कोई सार्थक अन्तर नही दिखाई पडता है दोनो ही पक्ष एक समान दिखाई देते है।
इसी प्रकार उपरोक्त सारणी मे व्यक्तित्व के जिन पक्षों का टी मूल्य निर्धारित मूल्य से अधिक है। इसका सीधा अर्थ यही है। कि इन पक्षों में जो अन्तर आया है। वह किसी कारणवश व्यक्तितव के ऐसे पक्ष नैराशय, स्नायु, दौर्बल्य, आत्म बोध तथा स्वभाव है। उपरोक्त दोनो समूहो के विद्यार्थियों के टी मूल्य में जो यह सार्थक अन्तर आया है। इससे यही निष्कर्ष निकलता है। कि उपरोक्त दोनो समूहो के विद्यार्थियों की नैराशय, दौर्बल्य, आत्म बोध तथा स्वभाव अलग-अलग होते है।
उपरोक्त सारणी का विश्लेषण करने पर यही पता चलता है। कि नवोदय विद्यालय तथा राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियो के व्यक्तित्व में जो दो पक्ष समायोजन व चिन्ता है। उनमें कोई भी अन्तर देखने को नही मिलता अर्थात उनमें समानता निर्दिष्ट होती है। इसी प्रकार उपरोक्त दोनो पक्षों को छोडकर सभी पक्षों में अन्तर विशेष होता हैं अतः निष्कर्ष नवोदय विद्यालयो तथा राजकीय पर्व माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियो में व्यक्तितव में सार्थक अन्तर है।

**परिकल्पना 2**

नवोदय विद्यालय तथा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में अध्ययन रत छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नही है। इस परिकल्पना का परीक्षण टी मूल्य परीक्षण विधि द्वारा किया गया है।

**तालिका 2**

| | समूह अ | | | समूह ब | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **शैक्षिक विमायें** | **छा0 की स0** | **माध्य** | **मानक विचलन** | **छात्रों की संख्या** | **माध्य** | **मानक विचलन** | **टी मूल्य** |
| वचन | 20 | 36-40 | 4-5 | 20 | 36-20 | 4-4 | -408 |
| दक्षता | 20 | 32-36 | 4-12 | 20 | 31-84 | 4-32 | 1-83 |
| गणित | 20 | 32-10 | 4-15 | 20 | 31-75 | 3-75 | -88 |
| भाषा | 20 | 31-20 | 3-48 | 20 | 33-54 | 3-65 | -92 |
| विषयों में उन्निति | 20 | 34-94 | 3-51 | 20 | 32-95 | 4-12 | 3-22 |

**समूह अ:** नवोदय विद्यालयए **समूह ब:** राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय

0.05 स्तर पर वांछित टी मूल्य - 2.00 (73 क) पर

0.01 स्तर पर वांछित टी मूल्य - 2.65 (73 क) पर

प्राप्त टी मूल्य विश्वास के दोनो स्तरों पर सार्थक है।

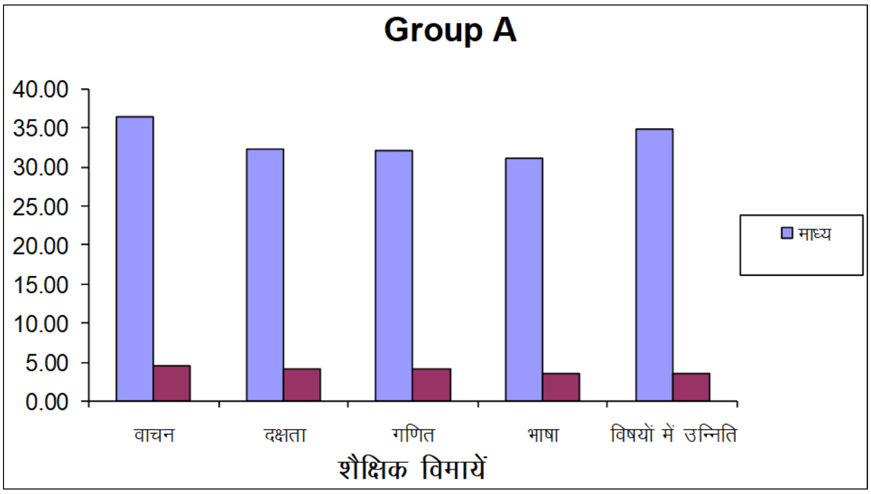


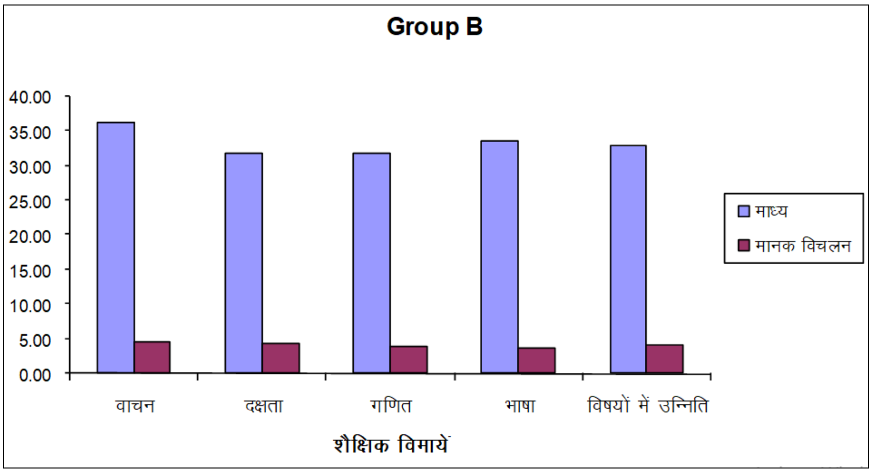


**लेखाचित्र 2**

प्राप्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि शैक्षिक उपलब्धि के जिन पक्षों अर्थात विमाओं के टी मूल्य 2.00 तथा 2.65 को बीच है उन पक्षों में कोई सार्थक अन्तर प्राप्त नही होता और ऐसे पक्ष दक्षता एवं इसी क्रम में गणित पर प्राप्त टी मूल्य तालिका मूल्य से कम है इसी प्रकार भाषा स्तर भी टी मूल्य कम हैं।

उपरोक्त सारणी में विश्लेषण से यह स्थिति सामने आती है। कि शैक्षिक उपलब्धि के वाचन तथा दक्षता आदि विमाओं पर प्राप्त टी मूल्य किसी भी दशा में सार्थक नही हैं जिसमें निष्कर्ष निकलता है। मूल्य किसी भी दशा में सार्थक नही है। जिससे निष्कर्ष निकलता है। कि शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित नवोदय विद्यालयों एवं राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों में विशेष अन्तर नही है।

दोनो समूह के बच्चो की शैक्षिक उपलब्धि की "गणित एवं भाषा" दोनो विमाओं में सार्थक ही दानो अन्तर वाली विधाओं के मध्यमानों का क्रमनुसार विश्लेषण करने से ज्ञात होता हों कि गणित एवं भाषा में नवोदय विद्यलाय के छात्र तथा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों में शैक्षिक उपलब्धि पर प्राप्त मध्य मान 32.36

है। जोकि दोनो समूह पर प्राप्त मध्य मान 31.88 से कम है इससे निष्कर्ष निकलता है कि नवोदय विद्यलाय तथा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के बच्चों की गणित एवं भाषा को अधिक महत्व देते है।

इसी प्रकार शैक्षिक उपलब्धि सभी विमाओं का अलग अलग विश्लेषण के उपरान्त सारांशतः यह कहा जा सकता है। कि शैक्षिक उपलब्धि की सारणी में दर्शायी गयी विमाओं के लिये दोनो समूह के बच्चें समान रूप से सक्रिय है जो कि उपरोक्त विमाओं को प्रभावित करते है। इन विमाओं के मध्यमानो मै जो अन्तर देखने को आया है वह सांख्यिकीय दृष्टि कोण से महत्वपूर्ण नही है।

**परिकल्पना 3**

उच्च माध्यमिक स्तर पर नवोदय विद्यालयों एवं राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन रत विद्यार्थियो के बुद्धि लब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है। का परिणाम इस परीक्षण टी मूल्य परीक्षण आधार पर किया जा सकता है।

बुद्धि स्तर की सार्थकता के मापन की सम्बन्धित तालिका

**तालिका 3**

| | समूह अ | | | समूह ब | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **शैक्षिक विमायें** | **छा0 की स0** | **माध्य** | **मानक विचलन** | **छात्रों की संख्या** | **माध्य** | **मानक विचलन** | **टी मूल्य** |
| आशिंक योग्यता | 45 | 31-41 | 10-55 | 45 | 31-05 | 11-16 | 0-157 |
| शाब्दिक योग्यता | 45 | 35-26 | 8-33 | 45 | 34-86 | 8-26 | 0-229 |
| आर्थिक योग्यता | 45 | 37-89 | 9-15 | 45 | 43-72 | 9-31 | 2-30 |
| समृति योग्यता | 45 | 27-92 | 7-42 | 45 | 31-96 | 7-38 | 2-59 |
| भाषण योग्यता | 45 | 35-30 | 8-07 | 45 | 33-06 | 7-29 | 1-38 |

.05 विश्वास के स्तर पर वांछित टी मूल्य 1.99, .01 विश्वास के स्तर पर वांछित टी मूल्य 2.63

**समूह अ:** नवोदय विद्यालयए **समूह ब:** राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय

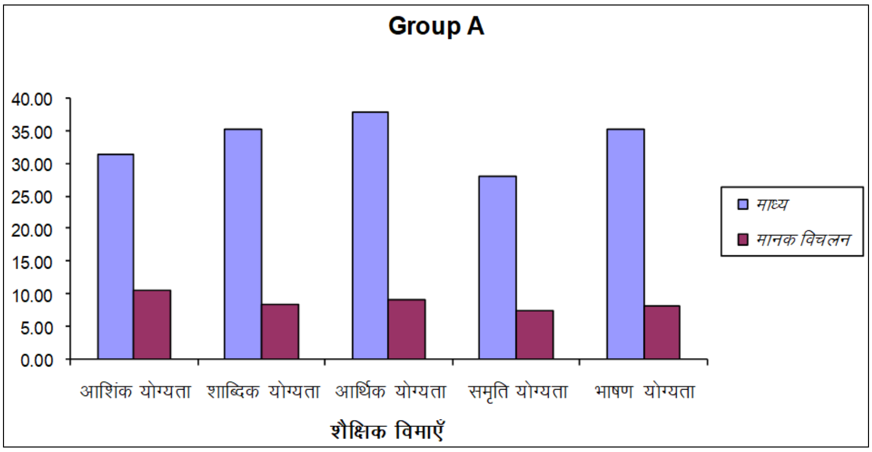


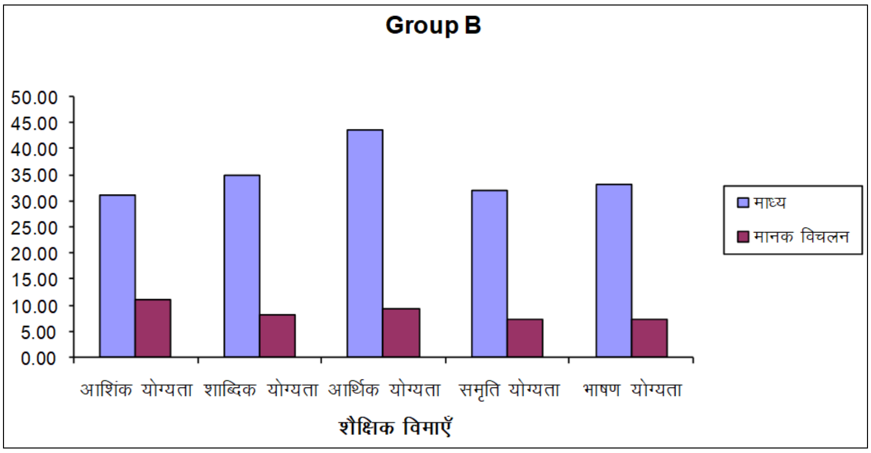


**लेखाचित्र 3**

उपरोक्त सारणी के विश्लेषण से ज्ञात होता है। कि दोनो विद्यालयों (नवोदय विद्यालय व राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय) में छात्रों के बौद्धिक स्तर में कुछ विमाओं में सार्थक नही आता तथा कुछ विमाओं में सार्थक अन्तर दोनों में मिलता है। बौद्धिक स्तर की जिन विमाओं का टी मूल्य निर्धारित 0.05 स्तर तथा 0.01 स्तर के बीच है उनमें सार्थक अन्तर नही है। ओर ऐसी विमाएं स्मृति योग्यता तथा आर्थिक योग्यता है अतः स्पष्टतः कहा जा सकता है। कि उपरोक्त विमाओं में कोई सार्थक अन्तर देखने को नही मिला है।

इस प्रकार कुछ विमाओं का टी मूल्य 0.5 प्रतिशत तथा 0.1 प्रतिशत स्तर में मूल्य से अधिक है और ऐसी विमाऐ वार्षिक योग्यता। अतः

इस विमा में सार्थक अन्तर देखने को आया है। क्योकि इसका मूल्य निर्धारित टी मूल्य से अधिक है।इसी प्रकार कुछ विमाये जैसे आंशिक योग्यता तथा शब्दिक योग्यता का टी मूल्य निर्धारित सार्थकता स्तर के मान से बहुत कम है अतः इन विमाओं मे भी कोई सार्थक अन्तर देखने को नही मिला है।इस प्रकार कुछ विमाओं का टी मूल्य 0.5 प्रतिशत तथा 0.1 प्रतिशत स्तर में मूल्य से अधिक है। इस विमा में सार्थक अन्तर देखने को आया है। क्येकि इसका मूल्य निर्धारित टी मूल्य से अधिक है। इसी प्रकार विमाये आंशिक योग्यता तथा शब्दिक योगयता का टी मूल्य निर्धारित सार्थकता स्तर मे मान से बहुत कम है अतः इन विमाओं में भी कोई सार्थक अन्तर देखने को नही मिला है।

अतः उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है। कि जो बच्चे नवोदय विद्यालय में अध्ययनरत है। उनका बौद्धिक स्तर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों मे अध्ययनरत विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक है। ओर यह अन्तर किसी कारणवश नही होगा।

## शोध का निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध में यही निष्कर्ष विभिन्न परीक्षणों के आधार पर निकलकर आता है कि जिस प्रकार की संस्थाओं में अध्ययन करते हैं उस संस्था का उन पर प्रभाव आवश्यक रूप से पड़ता है।

विभिन्न परिकल्पनाओं का निरीक्षण इसी उद्देश्य से किया गया है कि बालक पर विभिन्न संस्थाओं के छात्रों का बौद्धिक स्तर तथा व्यक्तित्व का प्रभाव पड़ता है क्योंकि व्यक्तित्व में ऐसे पक्ष-नैराशय, स्नायु, दोर्बल्य, आलबोध तथा स्वभाव आदि अलग-अलग होते हैं।

1. व्यक्तित्व के आधार पर (समायोजन एवं चिन्ता) में कोई सार्थक अन्तर देखने में नहीं आया।
2. यदि शैक्षिक उपलबिध के आधार पर देखा जाये तो (दक्षता एवं वाचन) ऐसे पक्ष हैं जिनमें कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. यदि बुद्धि लब्धि के आधार पर देखा जाए तो छात्रों में सार्थक अन्तर है।

व्याख्या-उपरोक्त परीक्षणों के आधार पर देखा गया कि दोनों विद्यालयों के बौद्धिक स्तर की कुछ विमाओं में सार्थक अन्तर नहीं है जबकि कुछ विमाओं में है। अतः निष्कर्ष यह निकलता है कि नवोदय विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों का बौद्धिक स्तर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों से ऊँचा है।

## सन्दर्भ सूची


1. वशिष्ठ, के0के0 एण्ड डॉ. शर्मा, डी0 एल0 ”भारतीय शिक्षा की नई दिशा“ राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली, प्रकाशक, इन्टरनेशनल पब्लिकेशन हाऊस, निकट गवर्नमेन्ट कालिज मेरठ।
2. दीक्षित, शम्भूशरणः राष्ट्रीय तथा भारतीय प्रकाशकः बशियन प्रब्लिशर्स 6654, मार्डन टाऊन जालन्धर मुद्रकः युगान्तर प्रेस दिल्ली।
3. महात्मा गाँधीः दि स्टूडेन्टस, पृष्ठ – 114
4. डॉ. मथुरा एस0 एस0 शिक्षा मनोवज्ञिानः प्रकाशक विनोद पुस्तक मन्दिर कार्यालय, रेगिय राधव मार्ग आगरा- 2 मुद्रणः कैलाश प्रिटिंग प्रेस।
5. स्किनर, सी0 ई0 शिक्षा मनोविज्ञान के तत्व, प्रकाशक ब्रहम दत्त दीक्षित निदेशक उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अमादमी, मुद्रकः रेहिताश्व प्रिन्टर्स, 268 रेगबाग रोड लखनऊ – 4
6. डॉ. पाण्डेय प्रसाद, कामता, “ शिक्षा मनाविज्ञान प्रकाशकः दोआब हाऊस दिल्ली मुद्रकः मित्तल प्रिन्टर्स शहादरा।
7. भटनागर सुरेशः शिक्षा मनोविज्ञानः प्रकाशक इन्टरनेशनल प्रब्लिशिंग, बेगम ब्रिज रोड निकट गर्वमेन्ट कॉलिज मुद्रक एफीशियेन्ट प्रिन्टर्स नई दिल्ली।
8. कुदेसिया, उमेश चन्द्र, शिक्षा प्रकाशन प्रकाशकः राँगेय राधव मार्ग हास्पिटल रोड, आगरा-3 मुद्रणः रवि मुद्रणालय आगरा।
9. कोचर, एच0 के0 सेकेण्डरी स्कूल एडमिनिस्ट्रेशन, जैन मिशन चन्द्र शैक्षिक संगठन प्रशासन एवं पर्यवेक्षण, प्रकाशकः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ् अकादमी, ए-26ध्2, विद्यालय मार्ग तिलक नगर, जयपुर मुद्रकः झेलेलाल प्रिन्टर्स, जयपुर।
10. कबरली, एलबुड पी0 स्टेट स्कूल एडमीर्निस्ट्रेशन।
11. रामनाथन, जी0 एजुकेशनल प्लांनिग एण्ड नेशनल इन्ट्रीग्रेशन।
12. मुखर्जी, एस0एन0 सेकेण्ड्री स्कूल एडमिनिस्ट्रेशन ण्ड फंम्शन न इण्डिया।
13. सुखिया एस0 पी0 विद्यालय प्रशासन एवं संगठन।
14. सिन्हा एच0 सी0 “शैक्षिक अनुसन्धान” प्रकाशकः विकास पब्लिशिग हाऊस नई दिल्ली, मुद्रक रूपाथ प्रिन्टर्स विश्वास नगर, शाहदरा दिल्ली।
15. हेनरी ई0 गेरेट स्टेटिस्टिक्स इन साक्लोजी एण्ड ऐजुकेशन, न्यूयार्क।
16. शर्मा जे0के0 एण्ड शर्मा, जी0एस0 शिक्षा में प्रारम्भिक सांख्यिकी, प्रकाशन रस्तौगी पब्लिकेशन, शिवाजी रोड मेरठ।
17. डॉ. वर्मा प्रति एण्ड श्री वास्तव, डी0 एस0 मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी प्रकाशकः विनोद पुस्तक मन्दिर मुद्रकः रवि मुद्रणालय आगरा- 21
18. सुखिया एस0पी मल्होत्रा, बी0पी0 मल्होत्रा, आर0एन0 (1919) “शैक्षिक अनुसन्धान के मूल तत्व, प्रकाशक, विनोद पुस्तक मन्दिर कार्यालय-रागेय राघव माग्र. आगरा-2”
19. गुड सी0बी0 एण्ड स्केटस, डी0 ई0 (1954) मेथडर्स ऑफ रिर्सच इन एजुकेशन, एप्लीटन कन्टरी न्यूयार्क।
20. वोल्टर, आर0 बोर्ग ”एजुकेशनल रिसर्च इन इन्ट्रोडक्शन“ न्यूयार्क, लॉगमान्स ग्रीन एण्ड कम्पनी लिमिटेड (1963) पृष्ठ 41
21. इबेल आर0 एल0 (1965) मेजरिग एजुकेशन एचीवमेन्ट“ नई दिल्लीः प्रिन्टर्स हिल ऑफ इन्डियन।
22. गिलफार्ड जे0पी0 (1971) साइकोमैट्रिक मेथडर्स, बम्बई।
23. गिलफार्ड जे0पी0 (1971) फण्डामेण्टल स्टेटिस्टिक्स इन साइक्लोजिकल एण्ड एजुकेशन, मेग्राहित टोकियों।
24. स्टीफेन्स, जे0 एम0 शिक्षा मनोविज्ञानः भारतीय प्रिन्टर्स, के -16 नवीन शाहदरा दिल्ली-32 द्वारा मुद्रित, अक्टुबर 1972।
25. भटनागर चाँद (1973) “अनुसन्धान परिचय” लक्ष्मी नारायण अग्रवाल हास्पिटल रोड, आगरा - 3 प्रकाशकःजेन सन्स प्रिन्टर्स मुद्रकः तकीया बजीरशाह, सेठ गली - आगरा- 3
26. अस्थाना, विपिन (1977) “मनोविज्ञान शोध विधियाँ” प्रकाशक: विनोद पुस्तक मन्दिर कार्यालय राँगय राघव आगरा -2
27. बेस्ट जोन डब्ल्यु (1977) रिसर्च इन एजुकेशन एग्लिवुड किलपस एन0जे0 प्रिन्टर्स हॉल।
28. बुच, एम0बी0 सेकिन्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन एन0सी0ई0 आर0टी0 नई दिल्ली (1938-78)
29. अग्रवाल आर0 एन0 अस्थाना विपिन (1978) मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन“ प्रकाशक- विनोद पुस्तक मन्दिर, कार्यालय रेगिय राधव मार्ग, आगरा-21
30. भार्गव महेश (1978) आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन प्रकाशक हर प्रसाद भार्गव, 4230 कचहरी घाट आगरासिंह लाभ प्रसाद, द्वारका व भार्गव महेश (1981) मनोविज्ञान वएवं शैक्षिक संख्यिकी के मूल आधार मुद्रकः मॉर्डन प्रिन्टर्स, बाग मुजफ्फरनगर खाँ, आगरा।
31. राय पारस नाथ, “एन इन्ट्रोक्शन टू रिसर्च मेथडर्स” आगरा5 लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, ऐजुकेशन एफीलियेटिड पब्लिशर (1983) पृष्ठ 100।